VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

WEEKLY FOCUS #98

# वैश्विक मूल्य श्रृंखलाएं

# (Global Value Chains: GVCs)

## भारत के लिए संभावनाएं और चुनौतियां

# परिचय

दुनिया के लगभग सभी देश किसी न किसी रूप में आपस में जुड़े हुए हैं और एक–दूसरे पर निर्भर भी हैं। देशों के मध्य वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी, लोगों, डेटा और विचारों का प्रवाह होता रहता है। इन प्रवाहों पर ही वैश्विक मूल्य श्रृंखला (GVC) की आधारशिला रखी गई है। इसके परिणामस्वरूप एक अधिक समृद्ध विश्व का उद्भव हुआ है। हालांकि, वैश्विक महामारी, रूस–यूक्रेन युद्ध तथा यू.एस.ए. एवं चीन के बीच वर्षों से जारी और लगातार बढ़ते तनाव के मद्देनजर यह अनुमान लगाया गया है कि विश्व पहले से ही विभूमंडलीकरण (Deglobalization) के युग में प्रवेश कर चुका है। इसके विपरीत, मैकेंजी की एक रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया गहराई से आपस में जुड़ी हुई है और अशांति की अवधि के दौरान भी यह जुड़ाव आश्चर्यजनक ढंग से लचीला सिद्ध हुआ है और कोई भी क्षेत्र अब आत्मनिर्भर नहीं रह गया है। इसलिए, अब किसी और पर निर्भरता से होने वाले नुकसान व जोखिम से बचते हुए देशों के मध्य परस्पर जुड़ाव से मिलने वाले लाभों का दोहन करना चुनौतीपूर्ण सिद्ध हो रहा है।

इस संरचनात्मक बदलाव और इससे संबंधित चुनौतियों को भारत के लिए GVCs के साथ अधिक गहराई से जुड़ने के अवसर के रूप में देखा जा रहा है। इसका कारण यह है कि घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई कारक भारत के पक्ष में हैं।

**इस पृष्ठभूमि में, यह समझना महत्वपूर्ण हो जाता है कि:**

- GVCs क्या हैं और इनका उद्भव कैसे हुआ?
- GVCs में भागीदारी के प्रमुख लाभ क्या हैं?
- कोई देश GVC में कैसे भाग लेता है और इस भागीदारी के प्रमुख निर्धारक तत्व कौन–से हैं?
- भारत GVC में किस प्रकार सम्मिलित है?
- GVCs में हाल ही में हुए बदलाव के पैटर्न क्या हैं?
- GVCs के साथ भारत की भागीदारी को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने वाली बाधाएं क्या हैं?
- GVCs के साथ स्वयं को एकीकृत करने के लिए क्या भारत द्वारा कोई पहल की गई है?
- भारत किस तरह से GVCs में अपने एकीकरण को और बेहतर कर सकता है?

इस डॉक्यूमेंट में, हम इन प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करेंगे।

# GVCs क्या हैं और इनका उद्भव कैसे हुआ?

- GVC वस्तुतः उपभोक्ताओं को बेचे जाने वाले **उत्पाद या सेवा के उत्पादन में शामिल चरणों की एक श्रृंखला है।**
- इसके अलावा, GVC **उत्पादन के प्रत्येक चरण में होने वाले मूल्यवर्धन (जैसे– डिजाइन और मार्केटिंग संबंधी उपाय, श्रम सेवाएं आदि) का प्रतीक भी होता है और इस उत्पादन के कम–से–कम दो चरण अलग–अलग देशों** में संपन्न होते हैं।
  - संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा निर्यात किया जाने वाला आई–फोन इसका एक उदाहरण है। आईफोन के कॉन्सेप्ट और डिजाइन का निर्णय कैलिफोर्निया में होता है। इसके हाई–टेक कंपोनेंट्स दूसरे विकसित देशों से आते हैं और फिर इन्हें चीन में असेंबल किया जाता है। कैलिफोर्निया से अंततः इसकी मार्केटिंग और ब्रांडिंग का प्रबंधन किया जाता है।

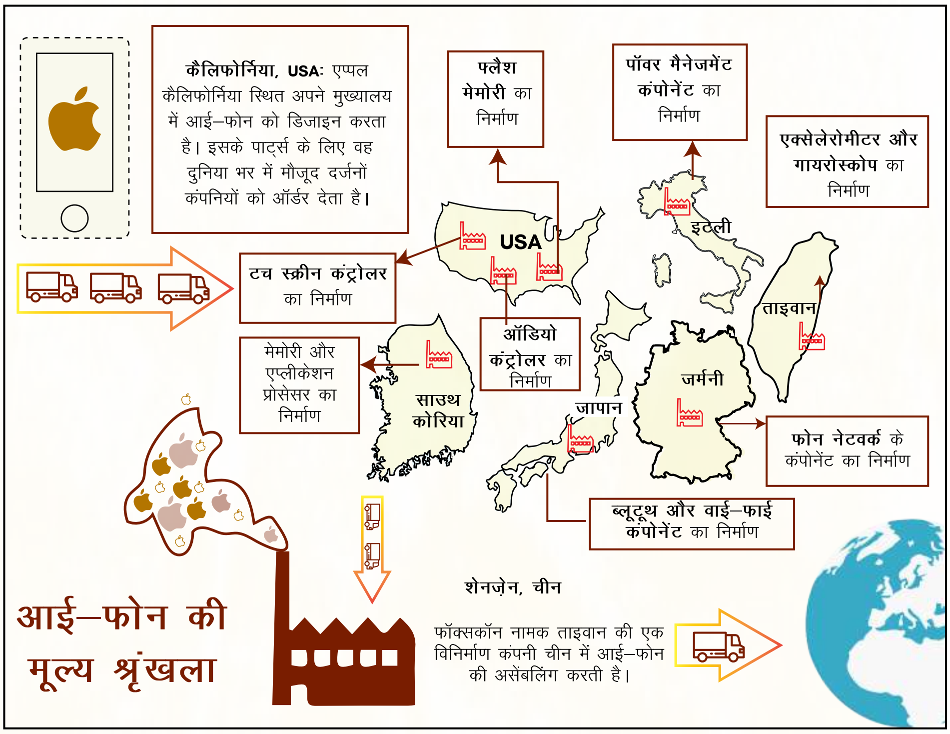


## GVCs का उद्भव

GVC का उद्भव 1970 के दशक में तब हुआ था जब देशों ने अपनी विकास रणनीतियों में निर्यात–उन्मुख औद्योगीकरण (Export-Oriented Industrialization: EOI) को जगह देना शुरू किया। इससे पहले आयात–प्रतिस्थापन आधारित औद्योगीकरण (Import-Substituting Industrialization: ISI) पर बल दिया जाता था, जिसकी प्रवृत्ति सभी विकासशील देशों में देखी गई थी।

**GVCs का उद्भव** (1970 का दशक)
जापानी निवेशकों द्वारा पूर्वी एशिया में एक क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखला विकसित की गई थी।

**GVCs का सुदृढ़ीकरण** (1980 के दशक से 1990 का दशक)
विश्व व्यापार संगठन (WTO) के उद्भव और व्यापार उदारीकरण से GVCs को मजबूती मिली।

**GVCs का बेहतर सुदृढ़ीकरण** (1990 के दशक से 2000 का दशक)
यूरोपीय संघ के गठन और वैश्विक अर्थव्यवस्था से चीन, भारत एवं रूस जैसे देशों के जुड़ने तथा ICT क्रांति से GVCs को और मजबूती मिली।

**GVCs में ठहराव** (2008 के बाद से)
वैश्विक वित्तीय संकट के बाद से GVCs में ठहराव और यहां तक कि गिरावट भी देखने को मिली है। फिर भी, विश्व व्यापार का लगभग आधा हिस्सा GVCs के अंतर्गत आता है।

# GVCs में भागीदारी के प्रमुख लाभ क्या हैं?

**आज, वैश्विक व्यापार का 50% से अधिक हिस्सा GVCs के अंतर्गत आता है। GVC** में शामिल होने के निम्नलिखित लाभ हैं:

- **उत्पादकता में वृद्धि:** यदि GVC में किसी देश की भागीदारी में एक प्रतिशत की भी वृद्धि होती है तो उससे उस देश की प्रति व्यक्ति आय में एक प्रतिशत से अधिक की वृद्धि होने का अनुमान रहता है, जो पारंपरिक व्यापार से होने वाली वृद्धि से लगभग दोगुनी है।
- **रोजगार के अधिक अवसर:** कंपनी की उत्पादकता में वृद्धि से कंपनी का उत्पादन बढ़ता है और कंपनी का विस्तार भी होता है। इसके परिणामस्वरूप रोजगार में भी बढ़ोतरी होती है।
  - GVCs विकासशील देशों में **संरचनात्मक बदलावों** से जुड़ी हुई है। इन बदलावों के तहत लोगों को कम उत्पादक गतिविधियों से बाहर निकलकर वस्तुतः विनिर्माण और सेवाओं में संलग्न होने के लिए प्रेरित किया जाता है। इससे लोगों की आय में वृद्धि होती है।
  - उदाहरण के लिए– इथियोपिया में GVC से जुड़ी कंपनियां अपनी अत्यधिक पूंजीगत लागत के बावजूद रोजगार में तेजी लाने में सफल रही हैं।
- **निर्धनता में कमी:** पारंपरिक व्यापार की तुलना में GVC से निर्धनता में अधिक गिरावट आई है। विश्व बैंक के अनुसार, गरीबी में सबसे तेज गिरावट उन देशों में दर्ज की गई है, जो वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के अभिन्न अंग बन गए हैं, जैसे– चीन, वियतनाम, बांग्लादेश आदि।
- **विशेषज्ञता के लिए अधिक संभावना:** वर्तमान समय में किसी उत्पाद का उत्पादन और उसका कारोबार किसी एक देश तक सीमित नहीं रह गया है। GVC के चलते एक ही उत्पाद के अलग–अलग घटकों को अलग–अलग देशों में उत्पादित या विनिर्मित किया जाता है। इसलिए देशों को अब घरेलू स्तर पर किसी उत्पाद की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला स्थापित करने या उसका अकेले उत्पादन करने की आवश्यकता नहीं रह गई है।
  - इससे सबसे बड़ा लाभ यह मिला है कि देश अब अपनी क्षमता व विशेषज्ञता के अनुसार GVC के तहत उत्पादन के एक निश्चित चरण के लिए ही उद्योग स्थापित कर सकते हैं।

**वैश्विक मूल्य श्रृंखलाएं, पारंपरिक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से अलग हैं!**

**पारंपरिक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में:**

- जिन वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात किया जाता है, उनका उत्पादन केवल एक ही देश में किया जाता है।
- वस्तुओं और सेवाओं का आयात घरेलू खपत के लिए किया जाता था न कि निर्यात के लिए।

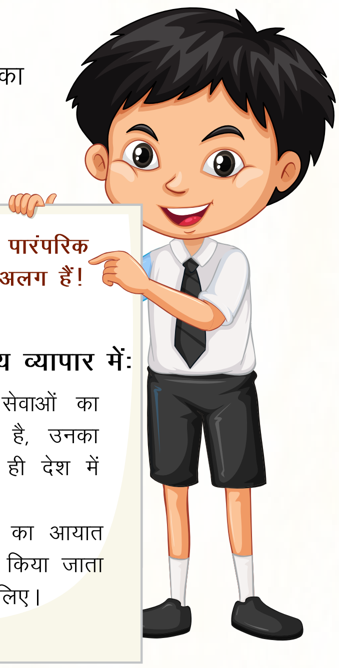

- **ज्ञान साझाकरण में सुगमता:** GVCs में शामिल होने से कंपनियों को आपस में ज्ञान साझा करने के लिए पर्याप्त अवसर मिल जाता है। इससे कंपनियों को अपनी औद्योगिक क्षमता बढ़ाने, उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार करने और उत्पादन में अत्याधुनिक गतिविधियों को शामिल करने में मदद मिलती है।
  - उदाहरण के लिए– वैश्विक और क्षेत्रीय सुपरमार्केट्स की ओर से उच्च गुणवत्ता वाले बागवानी उत्पादों की मांग और सोर्सिंग आवश्यकताओं के चलते केन्या, दक्षिण अफ्रीका और युगांडा में बागवानी उद्योग को बहुत अधिक बढ़ावा मिला था।
- **स्थानीय कंपनियों को मजबूत करना:** GVCs में शामिल होने से स्थानीय कंपनियों को इकॉनमी ऑफ़ स्केल प्राप्त करने और तकनीकी ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साझाकरण से अपनी क्षमता बढ़ाने में मदद मिलती है। इससे स्थानीय कंपनियों की निर्यात क्षमता में सुधार होता है।

## GVC में भागीदारी से जुड़े जोखिम

- **असमानता बढ़ने की संभावना:** GVC में भागीदारी से प्राप्त लाभ देशों के बीच और देशों के भीतर, असमान रूप से वितरित हैं।
- **कर राजस्व का नुकसान:** घरेलू निवेश को बनाए रखने और विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए देशों पर निगम कर को कम रखते हुए प्रतिस्पर्धी बने रहने का दबाव होता है।
- **छोटे निर्यातकों के लिए जोखिम:** विकासशील देशों में अनुबंधों (Contracts) का सही से कार्यान्वयन नहीं होता है। यहां अनुबंधों का पूरा पालन भी नहीं होता है। इसके कारण, कई बार अग्रणी कंपनियां अपने अनुबंधों को अचानक रद्द कर देती हैं।
- **आघातों का बढ़ना:** व्यापार या व्यावसायिक नेटवर्क में शामिल कंपनियों को प्राकृतिक आपदा जैसे आघातों के बाद व्यवधान का खतरा होता है। इस प्रकार के नेटवर्क में कुछ बड़े खरीदारों या महत्वपूर्ण इनपुट के आपूर्तिकर्ताओं का प्रभुत्व होता है।
- **जलवायु परिवर्तन से पारंपरिक व तुलनात्मक रूप से मिलने वाले लाभों पर प्रभाव:** उदाहरण के लिए– यूरोपीय संघ (EU) के ग्रीन डील से कार्बन–गहन GVCs (जैसे– रसायन उद्योग) में व्यापक रूप से शामिल देश प्रतिकूल रूप से प्रभावित होंगे। इससे मुख्य रूप से निम्न और मध्यम आय वाले देशों पर दबाव बढ़ सकता है।

# कोई देश GVC में कैसे भाग लेता है और इस भागीदारी के प्रमुख निर्धारक तत्व कौन–से हैं?

देश अपनी आर्थिक विशेषज्ञता के आधार पर **बैकवर्ड या फॉरवर्ड लिंकेज** में संलग्न होकर GVCs में भाग ले सकते हैं।

- **बैकवर्ड लिंकेज:** इसके तहत **एक देश घरेलू उत्पादन के लिए दूसरे देश से प्राप्त इनपुट का उपयोग करता है।** इस संदर्भ में, उत्पादन के लिए आवश्यक इनपुट या तो स्थानीय रूप से उपलब्ध नहीं होते हैं या उपलब्ध होने के बावजूद भी उनके कुछ पहलुओं (जैसे– मात्रा, गुणवत्ता और कीमत) में कमी होती है।
  - उदाहरण के लिए– भारत इस्पात विनिर्माण के लिए ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और ब्रिटेन से कच्चे माल की खरीद करता है।
- **फॉरवर्ड लिंकेज:** इसके तहत **एक देश, दूसरे देश में उत्पादन के लिए उपयोग किए जाने वाले इनपुट/मध्यवर्ती वस्तुओं की आपूर्ति करता है।** इस तरह के इनपुट की आपूर्ति ऐसे **विकासशील देशों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकती है** जो नए उद्योगों में प्रवेश करने के इच्छुक हैं और निर्यात बाजारों के लिए वस्तु का उत्पादन करने के तरीके सीखने की प्रक्रिया (भले ही प्रक्रिया सरल हो) में हैं।
  - उदाहरण के लिए– भारत दक्षिण कोरिया, जापान और चीन जैसे देशों में टिकाऊ प्रकृति की उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन के लिए इस्पात की आपूर्ति करता है।
  - हालांकि, ये इनपुट औद्योगीकृत अर्थव्यवस्थाओं के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं जो जटिल, विशिष्ट और उच्च मूल्य वाले इनपुट्स (जैसा कि आई–फोन विनिर्माण के मामले में ऊपर देखा गया) की आपूर्ति करते हैं।

**आपूर्ति श्रृंखला और मूल्य श्रृंखला (Supply chain and Value chain)**

**आपूर्ति श्रृंखला ऐसे निकायों/कंपनियों का एक नेटवर्क है,** जो कच्चे माल की खरीद करते हैं, उन्हें तैयार माल में परिवर्तित करते हैं और अंततः ग्राहकों में उनका वितरण या बिक्री करते हैं।

- इसके विपरीत, मूल्य श्रृंखला में किसी उत्पाद की संकल्पना से लेकर उत्पादन, वितरण और समर्थन तक के हर चरण पर अंतिम उत्पाद में मूल्य–सृजन या मूल्य–संवर्धन किया जाता है।
- इस प्रकार, मूल्य श्रृंखला समग्र आपूर्ति श्रृंखला का एक हिस्सा है।

## इस्पात विनिर्माण और टिकाऊ प्रकृति की उपभोक्ता वस्तुओं की GVC में भारत की भागीदारी

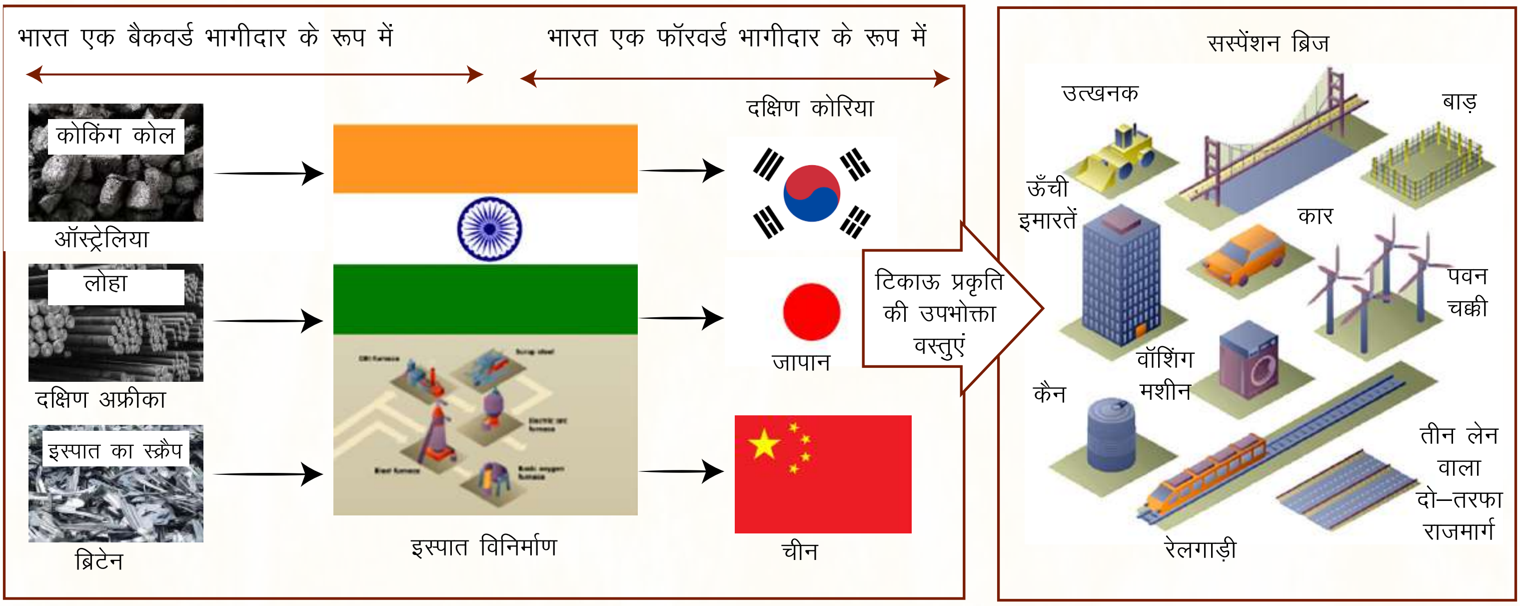


- अधिकांश विकसित और विकासशील देश कुछ हद तक दोनों प्रकार की GVC गतिविधियों (बैकवर्ड और फॉरवर्ड) में शामिल हैं। हालांकि **अपेक्षाकृत मजबूत बैकवर्ड लिंकेज वाले देशों में कमजोर फॉरवर्ड लिंकेज तथा मजबूत फॉरवर्ड लिंकेज वाले देशों में कमजोर बैकवर्ड लिंकेज की प्रवृत्ति देखने को मिलती है।**

# GVC में भागीदारी के प्रमुख निर्धारक तत्व

कई कारक GVCs में भाग लेने की देशों की क्षमता और व्यापकता को प्रभावित कर सकते हैं। इन्हें मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बांटा जा सकता हैः

**गैर–नीतिगत कारकः** इसके तहत संरचनात्मक व्यवस्था से संबंधित बैकवर्ड एवं फॉरवर्ड लिंकेज संबंधी कारक शामिल होते हैं।

- **सहायक कारक (Factor endowments):** GVCs में बैकवर्ड लिंकेज के जरिए भाग लेने के लिए देश में **कम–कुशल श्रम की उपलब्धता** एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। साथ ही, GVCs में फॉरवर्ड लिंकेज के जरिए भाग लेने के लिए देश में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता भी एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है।
- **बाजार का आकारः** किसी देश के घरेलू बाजार का आकार जितना बड़ा होगा, उसकी GVCs में बैकवर्ड लिंकेज के जरिए भागीदारी उतनी ही कम और फॉरवर्ड लिंकेज के जरिए भागीदारी उतनी ही अधिक होगी।
- **विकास का स्तरः** प्रति व्यक्ति आय जितनी अधिक होगी, फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंकेज के जरिए समग्र भागीदारी उतनी ही अधिक होगी। उदाहरण के लिए– विकसित देश उत्पादन के लिए विदेशों से अधिक कच्चा माल प्राप्त करते हैं और अपने समग्र निर्यात का एक बड़ा भाग मध्यवर्ती उत्पादों के रूप में विक्रय कर देते हैं।
- **औद्योगिक संरचनाः** किसी देश की GDP में विनिर्माण क्षेत्रक की हिस्सेदारी जितनी अधिक होगी, उसकी बैकवर्ड भागीदारी उतनी ही अधिक और फॉरवर्ड भागीदारी उतनी ही कम होगी।
- **अवस्थिति / भौगोलिक अवस्थितिः** GVC गतिविधि बड़े विनिर्माण केंद्रों के आस–पास अधिक होती है। अतः किसी देश की यूरोप, उत्तरी अमेरिका और एशिया के मुख्य विनिर्माण केंद्रों से दूरी जितनी अधिक होती है, उनकी GVC के तहत बैकवर्ड भागीदारी उतनी ही कम होती है। इससे यह पता चलता है कि किसी बड़े विनिर्माण केंद्र के समीप स्थित होने से अधिक लाभ मिलता है।

**नीतिगत कारकः**

- **व्यापार नीतिः** घरेलू तथा निर्यात बाजारों, दोनों में कम आयात शुल्क और क्षेत्रीय व्यापार समझौतों (RTAs) में भागीदारी से GVCs में बैकवर्ड या फॉरवर्ड लिंकेज के जरिए भाग लेना सुगम होता है।
- **FDI के लिए खुलापनः** FDI का मुक्त अंतर्वाह GVCs में बैकवर्ड या फॉरवर्ड लिंकेज के जरिए भाग लेने हेतु महत्वपूर्ण होता है।
- **संस्थागत गुणवत्ताः** बेहतर संस्थागत गुणवत्ता वाले देशों की GVCs में सभी स्तरों पर बेहतर भागीदारी होती है। भ्रष्टाचार, राजनीतिक अस्थिरता और सुधारों को लेकर अनिश्चितता सीमा–पार व्यापार के लिए हानिकारक होती है, क्योंकि ये वैश्विक खरीदारों तथा विक्रेताओं के लिए जोखिमों को बढ़ाते हैं।
- **GVC से संबंधित अन्य नीतियां,** जैसे– बौद्धिक संपदा संरक्षण, लॉजिस्टिक प्रदर्शन और बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता, आदि GVC में भागीदारी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं।

## भारत GVCs में कैसे भाग लेता है?

### अग्रणी सेवा निर्यातक देश

- भारत कार्यबल संबंधी कम लागत, ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था, अंग्रेजी बोलने वाले दक्ष लोगों की उपलब्धता, सरकारी समर्थन आदि के कारण **प्रतिस्पर्धी रूप से लाभ** की स्थिति में है। इसलिए, भारत सेवाओं के मामले में अग्रणी निर्यातक देश है। भारत ने **2030 तक सेवा आधारित निर्यात को 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है।**

**वैश्विक स्तर पर भागीदारी**

भारत की GVC भागीदारी को संचालित करने वाले प्रमुख उत्पादों में कोयला और पेट्रोलियम, वाणिज्यिक सेवाएं, रसायन और परिवहन संबंधी साधन शामिल हैं।

**फॉरवर्ड लिंकेज पर आधारित**

GVCs में भारत की भागीदारी ज्यादातर फॉरवर्ड लिंकेज पर केंद्रित है, क्योंकि भारत अभी भी आयातित सामग्रियों पर आधारित निर्यात के बजाय कच्चे माल एवं मध्यवर्ती उत्पादों के निर्यात पर बहुत अधिक निर्भर है।

**नेटवर्क उत्पाद**

इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे नेटवर्क उत्पाद के उत्पादन के लिए GVCs प्रमुख माध्यम हैं। भारत के कुल वस्तु निर्यात में इनका हिस्सा केवल 10% है।

**वैश्विक निर्यात में बढ़ती हिस्सेदारी**

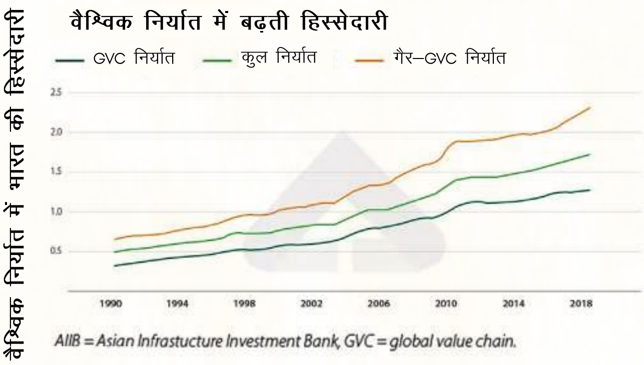


AIIB = Asian Infrastucture Investment Bank, GVC = global value chain.

**कम श्रम गहन**

उच्च तकनीक आधारित विनिर्माण में वृद्धि के बावजूद, भारत के GVCs लिंकेज में श्रम गहन क्षेत्रक की हिस्सेदारी में गिरावट आई है।

**भौगोलिक असमानता**

भारत का 75 प्रतिशत निर्यात केवल छह राज्यों से होता है। गुजरात की निर्यात में हिस्सेदारी 30 प्रतिशत है, वहीं बिहार की हिस्सेदारी एक प्रतिशत से भी कम है।

# एक छोटी सी वार्ता!

## GVCs से संबंधित स्माइल कर्व

**विनी:** गुड आफ्टरनून सर! वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं पर एक आर्टिकल पढ़ते समय, मुझे 'स्माइल कर्व' के बारे में पता चला। क्या आप मुझे इसका मतलब समझा सकते हैं?

**शर्मा सर:** हाँ विनी! इसको पहली बार 1992 में ताइवान में एसर कंपनी के संस्थापक स्टेन शिह ने प्रस्तुत किया था। यह एक ग्राफिकल चित्रण है जो यह बताता है कि कैसे **किसी उत्पाद के उत्पादन के अलग–अलग चरणों में अलग–अलग प्रकार से मूल्यवर्धन (Value added) होता है।**

**विनी:** सर, क्या आप मुझे इसके बारे में थोड़ा विस्तार से बता सकते हैं और यह वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं से किस तरह जुड़ा हुआ है?

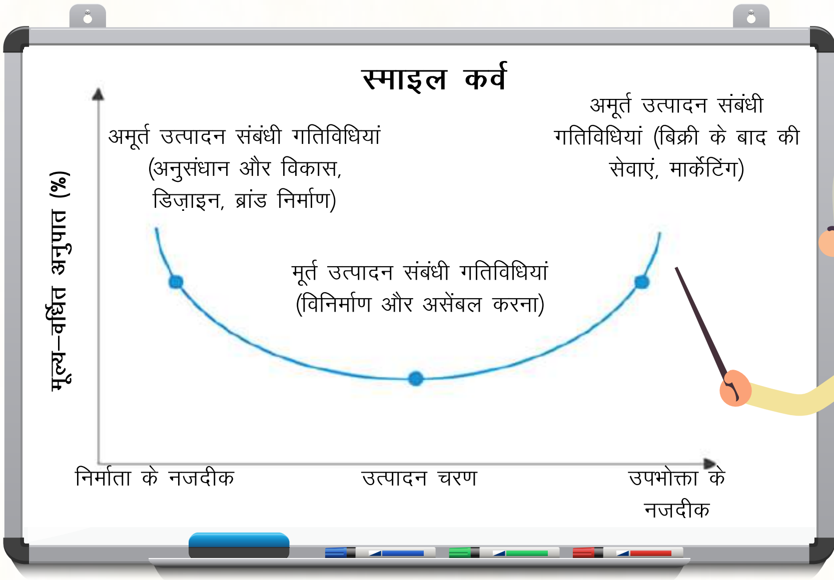


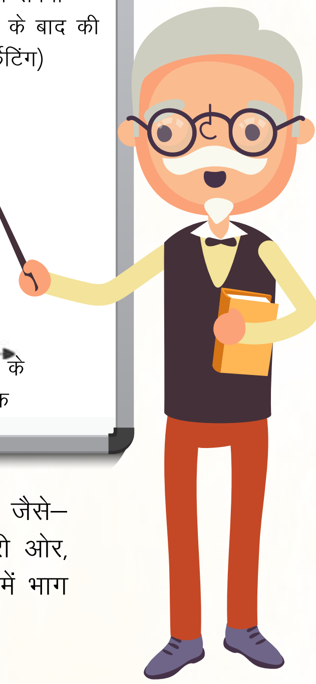

**शर्मा सर:** क्यों नहीं। देखो, इस ग्राफ में लंबवत अक्ष मूल्यवर्धन को दर्शाता है, जबकि क्षैतिज अक्ष उत्पादन प्रक्रिया के अलग–अलग चरणों को दर्शाता है।

ऐसा देखा जाता है कि वैश्विक मूल्य श्रृंखला के मामले में विकसित देश स्माइल कर्व के उच्च–मूल्य–वर्धित चरणों, जैसे– अनुसंधान और विकास (R&D), डिजाइन, ब्रांडिंग तथा मार्केटिंग पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। वहीं दूसरी ओर, विकासशील देश अक्सर स्माइल कर्व के निम्न–मूल्य–वर्धित चरणों, जैसे– विनिर्माण और असेंबल करने आदि में भाग लेते हैं।

**विनी:** सर, इसका मतलब है कि उपभोक्ता के लिए मूल्य श्रृंखला का आरंभिक एवं अंतिम चरण सबसे ज्यादा अहमियत रखता है और चीन जैसे विकासशील देश GVCs में अपनी भागीदारी द्वारा उत्पादों में बहुत कम मूल्य–वर्धन करते हैं।

**शर्मा सर:** बिलकुल सही विनी। हालांकि, विकासशील देश इन चरणों के दौरान आर्थिक संवृद्धि, रोजगार सृजन, प्रौद्योगिकी स्पिलओवर और ज्ञान के हस्तांतरण आदि से लाभान्वित हो सकते हैं। इसके अलावा, स्माइल कर्व में विकसित और विकासशील देशों की भूमिका समय के साथ बदल भी सकती है।

**विनी:** ऐसा कैसे होता है सर?

**शर्मा सर:** विकासशील देश मानव पूंजी में निवेश करके, अवसंरचना में सुधार करके, नवाचार को बढ़ावा देकर और अपने स्वयं के ब्रांड विकसित करके मूल्य श्रृंखला में अग्रणी या शीर्ष स्तर पर पहुंच सकते हैं। इसी तरह, यदि उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएं नवाचार और प्रौद्योगिकी के मामले में अपनी स्थिति को मजबूत करती हैं तो विकसित देशों को चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है तथा GVCs के मामलों में देशों की मूल्य–वर्धन संबंधी भूमिका में बदलाव आ सकता है।

**विनी:** मैं समझ गई सर। स्माइल कर्व पर अलग–अलग देशों की स्थितियों को समझना काफी फायदेमंद होता है। यह देशों के लिए अच्छे अवसरों की पहचान करने, निर्भरताओं और खामियों का समाधान करने तथा उपयुक्त व्यापार एवं औद्योगिक नीतियों के निर्माण हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

**शर्मा सर:** तुम सही समझी विनी!

# GVCs में हाल ही में हुए बदलाव के पैटर्न क्या हैं?

मैकेंजी रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान समय में GVCs पांच संरचनात्मक बदलावों से गुजर रही हैं:

- **वस्तु–उत्पादन वाली मूल्य श्रृंखला की व्यापार–गहनता में गिरावट:** हाल ही में, वस्तु–उत्पादन वाली लगभग सभी मूल्य श्रृंखलाओं की व्यापार गहनता (अर्थात्, सकल उत्पादन की तुलना में सकल निर्यात का अनुपात) में गिरावट आई है।
  - यह चीन और अन्य उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के विकास को दर्शाता है, जो अब अपने उत्पादन की तुलना में कहीं अधिक उपभोग कर रहे हैं।

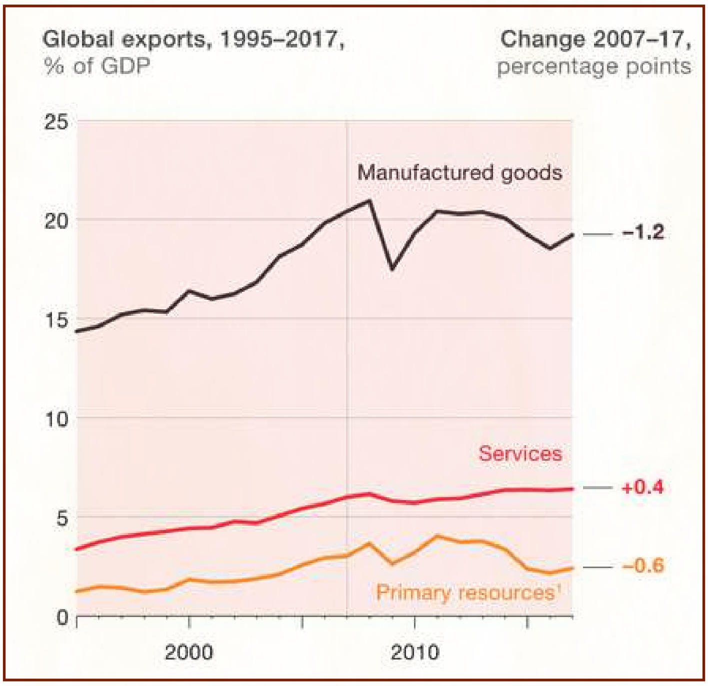


- **GVCs में सेवाओं की बढ़ती भागदारी लेकिन मूल्य के मामले में वस्तुओं के व्यापार से पीछे:** हालांकि, पिछले एक दशक में वस्तुओं के व्यापार की तुलना में, सेवाओं का व्यापार 60 प्रतिशत से अधिक तेजी से बढ़ा है।
  - ऐसा आंशिक रूप से नए प्रकार की लीजिंग, सब्सक्रिप्शन और अन्य "**ऐज ए सर्विस" व्यवसाय मॉडल की शुरुआत से संभव हुआ है।**
  - हालांकि, **सेवाओं**, जैसे– सॉफ्टवेयर, ब्रांडिंग, डिज़ाइन, परिचालन प्रक्रिया आदि को **अमूर्त परिसंपत्ति माना जाता है।** यद्यपि इनका मूल्य काफी अधिक होता है लेकिन जब तक इन सेवाओं को बौद्धिक संपदा शुल्क के योग्य नहीं बना लिया जाता, तब तक ये अक्सर मूल्यहीन और अज्ञात बनी रहती हैं।
- **श्रम–लागत संबंधी मूल्य लाभ पर आधारित व्यापार में गिरावट:** 1990 और 2000 के दशक की शुरुआत में, श्रम–गहन वस्तुओं तथा सेवाओं के लिए उत्पादन इकाइयों की स्थापना से संबंधित कई निर्णय श्रम–लागत पर आधारित थे। हालांकि, वर्तमान में **केवल 18 प्रतिशत वस्तु** व्यापार ही कम श्रम लागत वाले देशों से संबंधित है।
  - यह मुख्य रूप से **विकासशील देशों में बढ़ती मजदूरी दर** और कुशल श्रम या प्राकृतिक संसाधनों तक पहुंच, उपभोक्ताओं से निकटता तथा बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता जैसे अन्य घटकों के कारण हुआ है।
  - भविष्य में, ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इस रुझान में वृद्धि कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप श्रम–गहन विनिर्माण की जगह पूंजी–गहन विनिर्माण को प्राथमिकता मिल सकती है।
- **अधिक ज्ञान–गहन होती वैश्विक मूल्य श्रृंखलाएं:** कई मूल्य श्रृंखलाओं में, मूल्य वर्धन अब अपस्ट्रीम गतिविधियों, जैसे– अनुसंधान एवं विकास और डिज़ाइन तथा डाउनस्ट्रीम गतिविधियों, जैसे– **वितरण, विपणन तथा बिक्री के पश्चात् दी जाने वाली सेवाओं की तरफ स्थानांतरित हो रहा है।**
  - ज्ञान तथा अमूर्त उत्पादों (सेवाओं) की ओर बढ़ते झुकाव के कारण **अत्यधिक कुशल श्रमबल, मजबूत नवाचार और अनुसंधान एवं विकास क्षमता वाले तथा मजबूत बौद्धिक संपदा संरक्षण वाले देशों** को लाभ हो रहा है।
- **मूल्य श्रृंखलाएं अधिक क्षेत्रीय और कम वैश्विक प्रभाव वाली बन रही हैं:** 2013 के बाद से वैश्विक वस्तुओं के व्यापार का अंतर–क्षेत्रीय हिस्सा 2.7 प्रतिशत तक बढ़ गया है। यह बढ़ोतरी आंशिक रूप से उभरते–बाज़ार में खपत संबंधी वृद्धि को दर्शाती है।
  - यह स्थिति **एशिया और यूरोपीय संघ के देशों में** सबसे बेहतर तरीके से देखी जा सकती है। कई आपूर्तिकर्ताओं को आपस में बेहतर रूप से एकीकृत करने की आवश्यकता को देखते हुए, वैश्विक नवाचार मूल्य श्रृंखलाओं में क्षेत्रीयकरण सबसे अधिक परिलक्षित हो रहा है।

### फैक्ट्री एशिया

उन्नत प्रौद्योगिकी और उच्च मजदूरी दर वाली अर्थव्यवस्थाएं विनिर्माण के चरणों को **कम मजदूरी दर वाले निकटवर्ती विकासशील देशों की मूल्य श्रृंखला** में स्थानांतरित करने का प्रयास करती हैं। इससे क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं का निर्माण होता है। ऐसी ही एक क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखला 'फैक्ट्री एशिया' है।

# कोविड–19 के आलोक में वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं को फिर से आकार देना

कोविड–19 महामारी के कारण GVCs के समक्ष आई बाधाओं (इन्फोग्राफिक देखें) ने **व्यापक आत्मनिर्भरता हासिल करने तथा प्रोडक्शन रीशोरिंग** की आवश्यकता को उजागर किया है। प्रोडक्शन रीशोरिंग वस्तुतः कंपनी के मूल देश में वस्तु के उत्पादन और विनिर्माण को पुनः वापस शुरू करने की प्रक्रिया है।

## कोविड–19 लॉकडाउन संबंधी नीतियों का GVCs पर प्रभाव

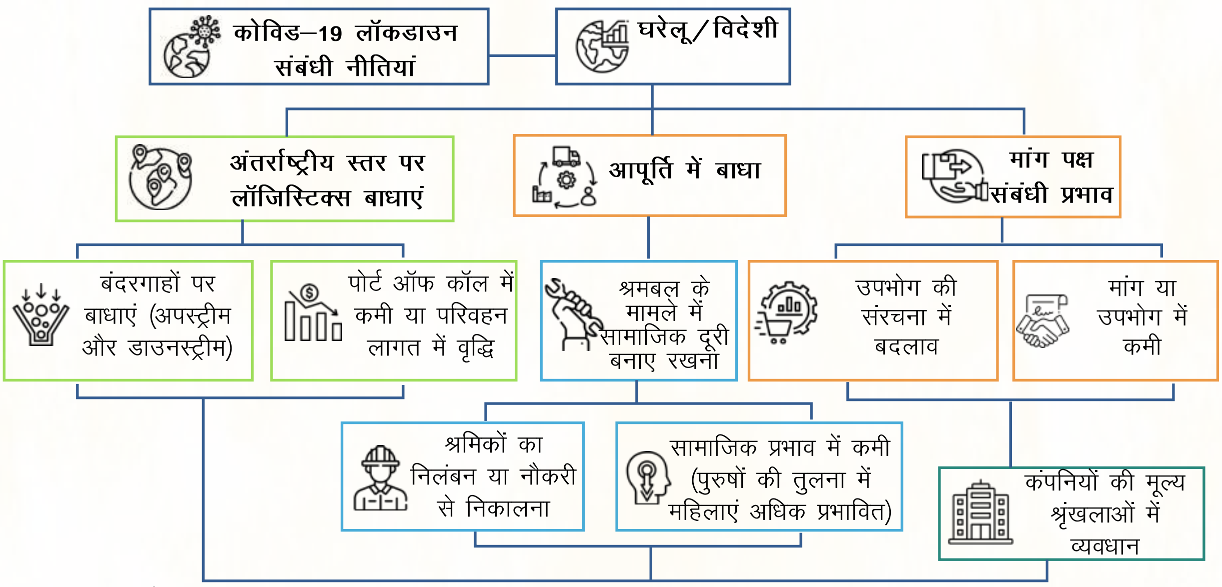


## क्या रीशोरिंग एक समाधान है?

विश्व बैंक के शोध से पता चलता है कि **रीशोरिंग प्रभावी नहीं होगा।** यह **52 मिलियन अतिरिक्त लोगों को चरम गरीबी** में धकेल सकता है। इस चरम गरीबी से सबसे अधिक उप–सहारा अफ्रीका के लोग प्रभावित होंगे।

- प्रशुल्क और सब्सिडी की सहायता से रीशोरिंग करने वाले देशों में भी **व्यापार की कमी के चलते उनकी स्वयं की आय में गिरावट आ सकती है।**
- दूसरी ओर, आपसी व्यापार को बढ़ाकर वर्ष 2030 तक लगभग **22 मिलियन लोगों को गरीबी से बाहर निकाला जा सकता है।** इससे हाशिए पर स्थित 40% लोगों की आय में सुधार हो सकता है।
- **ऐसा देखा गया है कि विविधीकरण से लचीलेपन को बढ़ावा मिलता है।** अतः संकट के दौरान, **GVCs में अधिक गहन तरीके से एकीकृत देशों ने दूसरों की तुलना में अधिक तेजी से रिकवरी की है।**

## आगे की राह

- विशेषज्ञों ने खामियों को दूर करने और **लचीली आर्थिक संवृद्धि** को बढ़ावा देने हेतु अधिक आर्थिक एकीकरण करने तथा GVCs को मजबूत करने का सुझाव दिया है। **'चाइना प्लस वन स्ट्रेटेजी' GVCs** को मजबूत करने वाली ऐसी ही एक पहल है।
  - इसे प्रेरित करने वाले बलों में प्रमुख रूप से अलग–अलग प्रकार के **भू–राजनीतिक कारण शामिल हैं (इन्फोग्राफिक्स देखें)।**
- **यूरोपीय संघ, मैक्सिको, ताइवान और वियतनाम जैसे देश तथा अन्य क्षेत्र** अग्रलिखित क्षेत्रकों में चीन–प्लस–वन मॉडल के स्पष्ट सफल उदाहरण रहे हैं। ये क्षेत्रक हैं: मशीनरी, ऑटोमोबाइल तथा परिवहन एवं बिजली के उपकरण।
- हालांकि, श्रम और भूमि से जुड़े अलग–अलग परंपरागत मुद्दों के कारण **भारत को व्यापार में ऐसे बदलावों से कोई खास फायदा नहीं हुआ है।**

# GVCs के साथ भारत की भागीदारी को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने वाली बाधाएं क्या हैं?

- **घरेलू उद्योग पर केंद्रित आर्थिक नीति:** घरेलू उद्योग पर केंद्रित भारत की पुरानी औद्योगिक नीतियों में विभिन्न उपायों के तहत **घरेलू उद्योगों के संरक्षण** पर विशेष जोर दिया गया था। इसमें **आयात की जगह निर्यात को बढ़ावा, लाइसेंस राज और सरकार के नेतृत्व वाले औद्योगीकरण** आदि के तहत प्रशुल्क, सब्सिडी, कोटा तथा ऐसे अन्य उपाय शामिल थे। इसके चलते वृहद मूल्य श्रृंखलाओं में भारत की भागीदारी के समक्ष रुकावट पैदा हुई है।

- **लीड फर्म्स की कम संख्या:** भारतीय नीतियों के कारण GVCs में आपूर्ति से लेकर अंतिम उत्पाद तक की मूल्य श्रृंखला के सभी पहलुओं में सक्षम व पर्याप्त संख्या में लीड फर्म्स स्थापित नहीं हो पाते हैं।
  - **कौशल अभाव व वित्त की कमी, कस्टम/आयात संबंधी प्रक्रियाओं और कर की उच्च दर** आदि के कारण लीड फर्म्स भारत में विकसित नहीं हो पाती हैं।

## GVC में लीड फर्म (Lead firms) की भूमिका

- लीड फर्म वह कंपनी है, जो **संपूर्ण मूल्य श्रृंखला को नियंत्रित करती है और अपने उत्पादों की बिक्री करती है।**
  - उदाहरण के लिए– ऑटोमोबाइल क्षेत्रक में टाटा मोटर्स और फार्मास्युटिकल क्षेत्रक में रैनबैक्सी ने प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, आपूर्ति श्रृंखला की स्थापना तथा विदेशी निवेश को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- लीड फर्म का सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) के साथ अत्यधिक संख्या में **फॉरवर्ड या बैकवर्ड वाणिज्यिक संबंध हो सकता है।**

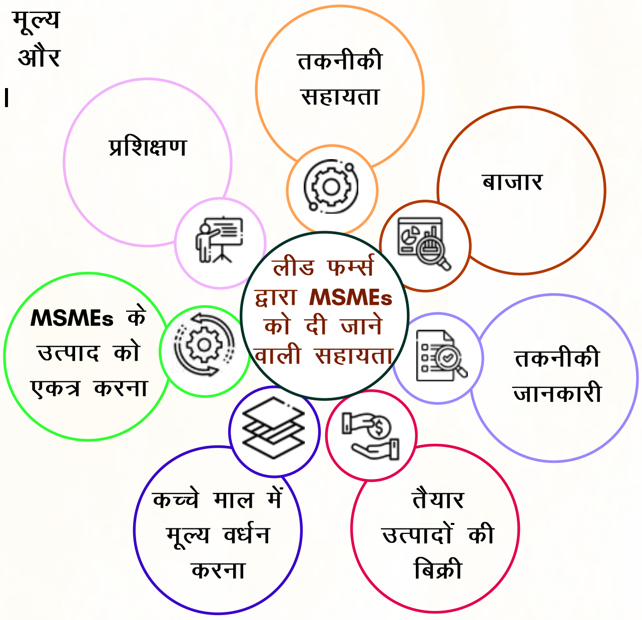


- **MSMEs से अपेक्षित लाभ न उठा पाना:** भारत में MSMEs सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 30 प्रतिशत और देश के निर्यात में लगभग 50 प्रतिशत का योगदान करते हैं। इसके बावजूद GVCs में इनकी प्रभावी भूमिका देखने को नहीं मिल पा रही है।
  - इसके पीछे **अपर्याप्त नवाचार, वित्त तक पहुंच की कमी और लीड फर्म्स के साथ अपर्याप्त लिंकेज** इत्यादि कारक उत्तरदायी रहे हैं।

- **सीमित क्षेत्रीय एकीकरण:** GVCs खासकर ऐसे भौगोलिक क्षेत्रों में फलते-फूलते हैं जो टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं को कम करके एक-दूसरे के साथ व्यापार को उदार बनाते हैं, व्यापार को सुगम बनाने वाले उपायों को सक्रिय रूप से लागू करते हैं तथा निवेश का संरक्षण करते हैं। ये उपाय आमतौर पर मुक्त व्यापार समझौतों (FTAs) का हिस्सा होते हैं।
  - हालांकि, भारत किसी बड़े ट्रेड ब्लॉक्स का हिस्सा नहीं रहा है, जिस कारण से GVCs में भारत का प्रवेश बहुत बाद में हुआ है, उदाहरण के लिए– सार्क निष्क्रिय स्थिति में है तथा भारत ने 2020 में खुद को RCEP (क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी) से अलग कर लिया था।

- **तकनीकी बदलाव:** भारत में कार्यबल की री-स्किलिंग और अप-स्किलिंग की गति अत्यंत धीमी है। यह गति मूल्य श्रृंखलाओं में डिजिटल प्रौद्योगिकी से संबंधित दिन-प्रतिदिन होने वाले बदलावों से मेल नहीं खाती है।

## अगली पीढ़ी की प्रौद्योगिकियां और GVCs

**नवीन प्रौद्योगिकियों में वैश्विक व्यापार में आमूलचूल बदलाव लाने की क्षमता है**

अगली पीढ़ी की प्रौद्योगिकियां, जैसे– डिजिटल प्लेटफॉर्म, ब्लॉकचेन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आदि **व्यापार के प्रवाह और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं को एक नया स्वरूप** प्रदान करेंगी। यद्यपि पिछली ICT क्रांति के विपरीत, इन प्रौद्योगिकियों का आने वाले वर्षों में व्यापार पर अधिक विविध एवं जटिल प्रभाव देखने को मिलेगा।

| | | | |
|---|---|---|---|
| **लेन-देन की लागत को कम करना** | **डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म**: सीमा-पार B2B और B2C लेन-देन को सुगम बनाकर वस्तुओं के व्यापार में **1.3-2.1 ट्रिलियन डॉलर** की वृद्धि होगी | **लॉजिस्टिक्स प्रौद्योगिकियां**: व्यापार अवरोधों और देरी से जुड़ी समस्याओं को दूर कर वस्तुओं के व्यापार में **6-10%** वृद्धि होगी | |
| **बदलती अर्थव्यवस्थाएं और उत्पादन स्थल** | **एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग**: उपभोग स्थलों पर उत्पादन की अनुमति देकर वस्तु व्यापार में **790 बिलियन डॉलर तक** की गिरावट आएगी | **एडवांस रोबोटिक्स**: रीशोरिंग या सीमित ऑफशोरिंग की सहायता से वस्तु व्यापार में **1.5-3 ट्रिलियन डॉलर** तक की गिरावट आएगी | **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस**: आउटसोर्स बिजनेस और आई.टी. सेवाओं में **9% तक** की गिरावट आएगी |
| **बदलती वस्तुएं** | **नवीनीकरण**: विद्युत उत्पादन से संबंधित इनपुट्स के व्यापार में लगभग 100 बिलियन डॉलर की गिरावट, मुख्य रूप से घटते वस्तु व्यापार द्वारा संचालित होगी | **इलेक्ट्रिक व्हीकल्स**: कुल तेल व्यापार में **लगभग 6%** की गिरावट आएगी; व्हीकल्स के पुर्जों से जुड़े व्यापार में **लगभग 10% की** गिरावट आएगी | |

**2030 तक अनुमानित प्रभाव**

स्रोत: IMF: WTO: OECD: UNCTAD: मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट विश्लेषण

- **फर्म्स/कंपनियों द्वारा सामना की जाने वाली संरचनात्मक कमियां:**
  - **गुणवत्ता मानकों को पूरा करना:** OECD, WTO और UNCTAD द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, **कई बाजारों में आपूर्ति करने वाली कंपनियों** को अलग-अलग देशों के अलग-अलग मानकों या प्रमाणन व्यवस्थाओं के अनुरूप उत्पादों को तैयार करना पड़ सकता है।
    - इससे **उत्पादन की लागत बढ़ती है।**
  - **संस्थागत समर्थन का अभाव:** इंडियन काउंसिल फॉर रिसर्च ऑन इंटरनेशनल इकोनॉमिक रिलेशंस (ICRIER) के अनुसार, भारत में ऐसी कई नीतियां मौजूद हैं जो प्रत्यक्ष प्रोत्साहन की सहायता से दिन-प्रतिदिन के व्यापार प्रवाह, आयात और निर्यात का समर्थन करती हैं।
    - हालांकि, GVCs **में अपनी भागीदारी बढ़ाने को लेकर योजनाओं में कमी** है, अर्थात् देश के भीतर वस्तुओं और सेवाओं की उत्पादन लागत में कमी लाने वाली नीतियों का अभाव है।
  - **पर्याप्त जानकारी का अभाव:** बाजार, व्यापार भागीदार, एक्जिम (आयात-निर्यात) नियम और यहां तक कि व्यापार वित्त से जुड़ी जानकारी कंपनियों के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसी जानकारियां साझेदारी के निर्माण तथा मूल्य श्रृंखलाओं में कंपनियों के समावेशन को प्रोत्साहित करती हैं। इस तरह की जानकारियों के अभाव के चलते **GVCs के साथ उद्यमों की एकीकरण प्रक्रिया बाधित होती है।**
  - **घरेलू नीतिगत चुनौतियां:** जटिल कर नीतियों और प्रक्रियाओं, अवसंरचना की गुणवत्ता एवं व्यापार नीति में अनिश्चितताओं के कारण भारत में उत्पादन बढ़ाने वाले प्रयासों के समक्ष बाधाएं पैदा होती हैं।

## GVCs में स्वयं को एकीकृत करने के लिए भारत द्वारा शुरू की गई प्रमुख पहलें

भारत ने मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे रूपांतरकारी कार्यक्रमों के तहत कई बाधाओं को दूर करते हुए GVCs में स्वयं को एकीकृत करने हेतु अत्यधिक ठोस प्रयास किए हैं। गौरतलब है कि ये बाधाएं पहले देश को अपनी पूरी क्षमता का लाभ उठाने से रोकती थी। इन विशिष्ट उपायों में शामिल हैं:-

### उत्पादन से संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजना

- इसके तहत पात्र/ योग्य विनिर्माताओं को ऑटोमोबाइल और ऑटो पार्ट्स जैसे 14 प्रमुख क्षेत्रकों में भारत को विनिर्माण हब बनाने के लिए वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है।

### श्रम सुधार

- 29 अलग-अलग कानूनों का चार संहिताओं, यथा- **मजदूरी; व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य, कार्यदशा; औद्योगिक संबंध; और सामाजिक सुरक्षा** में समेकित किया गया है।

### अवसंरचना विकास

- **भारतमाला:** इसका उद्देश्य लॉजिस्टिक प्रदर्शन सूचकांक (LPI) में सुधार के लिए मौजूदा राजमार्ग नेटवर्क में महत्वपूर्ण अवसंरचना से संबंधित कमियों को दूर करना है।
- **सागरमाला:** इसका उद्देश्य देश के समुद्र तट और अंतर्देशीय जलमार्गों का लाभ उठाकर औद्योगिक विकास हेतु बंदरगाह आधारित विकास को बढ़ावा देना है।
- **राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP) कार्यक्रम:** देशभर में उच्च गुणवत्ता वाली अवसंरचनाएं प्रदान करना, जैसे- परिवहन, ऊर्जा और जल।
- **पी.एम. गति शक्ति- अवसंरचना के विकास के लिए राष्ट्रीय मास्टर प्लान:** यह एक साझे विजन के साथ अवसंरचनात्मक परियोजनाओं की योजना, डिजाइन और निष्पादन की सुविधा द्वारा अगली पीढ़ी की अवसंरचना के सृजन लिए एक डिजिटल मंच है।

### प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)

- भारत में अर्थव्यवस्था के ज्यादातर क्षेत्रकों में **स्वचालित मार्ग से 100% विदेशी निवेश की अनुमति दी गई है।**

### विदेश व्यापार नीति (FTP), 2023

- इसका उद्देश्य री-इंजीनियरिंग और ऑटोमेशन की प्रक्रिया के जरिए निर्यातकों के लिए ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को सुगम बनाना है। इसके अंतर्गत कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं इस प्रकार हैं:
  - **अग्रिम प्राधिकरण योजना (Advance Authorization Scheme):** इसके तहत निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के विनिर्माण के लिए आयात किए जाने वाले कच्चे माल को शुल्क मुक्त किया जाता है।
  - **पूंजीगत वस्तुओं का निर्यात संवर्धन (Export Promotion of Capital Good) योजना:** निर्यात के उद्देश्य से उत्पादन के लिए पूंजीगत वस्तुओं के आयात पर शून्य सीमा शुल्क लगाना।
  - **निर्यात उत्कृष्ट शहर (Towns of Export Excellence: TEE):** मौजूदा 39 शहरों के अलावा चार नये शहरों को TEE के रूप में नामित किया गया है। ये चार शहर हैं- फरीदाबाद, मुरादाबाद, मिर्जापुर और वाराणसी।
    - TTE उन शहरों को प्रदान किया जाने वाला दर्जा है जो किसी विशिष्ट क्षेत्रक में कम मूल्य वाले सामान का उत्पादन और निर्यात करते हैं। इन क्षेत्रकों में शामिल है- हस्तकला, हथकरघा, समुद्री आहार, दवा, मत्स्य पालन, परिधान, कॉयर, चमड़े के उत्पाद आदि।

# भारत किस तरह से GVCs में अपने एकीकरण को और बेहतर कर सकता है?

- **कौशल विकास:** इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर्स और फार्मास्युटिकल जैसे उच्च तकनीक वाले क्षेत्रकों में GVCs में हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए, भारत को मौजूदा प्रक्रियाओं तथा संबद्ध कौशल दक्षता को बढ़ाने पर अधिक ध्यान देना चाहिए। डिजाइन या R&D गतिविधियों में संलग्न होकर यह दक्षता बढ़ाई जा सकती है। इससे भारत को GVCs में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।
- **क्षेत्रक आधारित विविधीकरण:** भारत कई क्षेत्रकों में मजबूत स्थिति में है, परंतु यह स्थिति काफी हद तक घरेलू मांग से प्रेरित है। हालांकि, रक्षा, एयरोस्पेस और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे कुछ क्षेत्रक हैं जो वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में भारत की भागीदारी को बढ़ा सकते हैं।
- **MSMEs को समर्थन:** इन्हें मजबूती प्रदान करने के साथ-साथ ऋण की उपलब्धता को लेकर विश्वास दिलाना होगा, ताकि वे बाहरी कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में स्वयं को सक्षम बना सकें और स्वयं को सुरक्षित रख सकें। इसके लिए PLI योजना जैसी पहलों की सहायता से वित्त की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। साथ ही, इनके डिजिटलीकरण तथा औपचारीकरण को प्रोत्साहित करते हुए सुविधाजनक बनाया जाना चाहिए।
- **अवसंरचना को अपग्रेड करना:**
  - **डिजिटल अवसंरचना को निम्नलिखित की सहायता से अपग्रेड किया जा सकता है:**
    - आई.सी.टी., ब्रॉडबैंड और 5G कनेक्टिविटी में वृद्धि करके;
    - डेटा सुरक्षा नियमों पर स्पष्टता सुनिश्चित करके (इससे डिजिटल अवसंरचना के लिए निवेश संबंधी निर्णय प्रभावित हो सकते हैं); और
    - क्रॉस-बॉर्डर पेपरलेस ट्रेडिंग को लागू करके।
  - **भौतिक अवसंरचना को निम्नलिखित की सहायता से अपग्रेड किया जा सकता है:**
    - **'राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति'** का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करके;
    - सड़क और अन्य अंतर्देशीय परिवहन नेटवर्क को बढ़ाकर; और
    - विद्युत आपूर्ति और वितरण में विद्यमान समस्याओं का समाधान करके।
- **कारोबारी माहौल को बेहतर बनाना:**
  - **निवेश और वित्तीय विनियमन:**
    - **विवाद निपटान:** इसके तहत द्विपक्षीय निवेश संधि प्रणाली के निष्पादन के दौरान बाधा रहित विवाद समाधान सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
    - **कर व्यवस्था को लेकर निश्चितता:** इस संदर्भ में, कर प्रक्रियाओं और नीतियों को सरल तथा सुव्यवस्थित बनाना चाहिए। इसके अलावा, घरेलू लागत एवं आयात लागत को बराबर करने के लिए आयात शुल्क और GST दरों में भी तालमेल सुनिश्चित करना चाहिए।
    - **ईज ऑफ डूइंग बिजनेस हेतु अन्य उपाय:** इसके तहत आयात संबंधी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना चाहिए और व्यापार के मामले में अज्ञात बाधाओं को कम किया जाना चाहिए। इसके अलावा, भारत को अपनी बाजार पहुंच को बढ़ाने के लिए **व्यापार समझौतों को प्राथमिकता** देनी होगी। साथ ही, **लागत संबंधी लाभ प्रदान करने, देरी से बचने तथा नौकरशाही की उलझनों को कम करने पर भी ध्यान केंद्रित** करना होगा।
  - **व्यापार को सुगम बनाना:**
    - **व्यापार नीति:** इनमें शामिल हैं- व्यापार नीति और निवेश नीति के बीच संबंधों की समीक्षा करना; सीमा-पार प्रक्रियाओं को सरल और सुव्यवस्थित करना; प्रशुल्क नियमों में निश्चितता लाना आदि।
    - **गुणवत्ता में सुधार: मानकीकरण पर भारतीय राष्ट्रीय रणनीति** को लागू करना चाहिए ताकि अंतर्राष्ट्रीय मानकों को पूरा करने हेतु फर्म्स की क्षमता को बढ़ाया जा सके।
- **GVCs के साथ लिंकेज संबंधी लचीलेपन को सुनिश्चित करना:**
  - **महत्वपूर्ण वस्तुओं के मामले में आपूर्ति श्रृंखलाओं की पहचान (अर्थात् मैपिंग) करना:** लोक स्वास्थ्य, देश की आर्थिक सुरक्षा आदि के लिए महत्वपूर्ण वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखलाओं की पहचान फायदेमंद साबित हो सकती है। इससे आपूर्ति श्रृंखला में व्याप्त खामियों का पता लगाने और महत्वपूर्ण वस्तुओं की आपूर्ति को बनाए रखने के लिए रणनीति तैयार करने में मदद मिलेगी।
  - **अतिरिक्त भंडारण को बनाए रखना:** सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे पास आपातकालीन भंडारण रहे। इसके अलावा, सरकार को निवेश के लिए एक बेहतर माहौल और निश्चित शुल्क संरचना की सहायता से विविध आपूर्ति श्रृंखलाओं के निर्माण हेतु कंपनियों को सहयोग प्रदान करना चाहिए।
  - **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** सरकार को डिजिटल प्रौद्योगिकियों और साधनों के उपयोग को सुगम बनाना चाहिए। ये कंपनियों को आपूर्ति के मामले में संभावित व्यवधान की पहचान करने और उसके अनुसार कार्रवाई करने में सहायता कर सकते हैं।

### एक लर्निंग मॉडल: बांग्लादेश

**वस्त्र और परिधान उद्योग में वैश्विक स्तर हासिल** करने के बांग्लादेश के प्रयास ने उसे महत्वपूर्ण आर्थिक लाभ प्राप्त करने में मदद की है।

- बांग्लादेश का **रेडीमेड गारमेंट्स का निर्यात वर्ष 2000 में लगभग 5 बिलियन डॉलर था, जो हाल के वर्षों में बढ़कर 30 बिलियन डॉलर** से अधिक हो गया है।
- इस मामले में बांग्लादेश अब **चीन के बाद विश्व स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक** देश है। इसके कुल वस्त्र निर्यात में 80% से अधिक योगदान रेडीमेड गारमेंट्स का है।
- यह सरकार द्वारा वस्त्र और परिधान उद्योग को **विश्व स्तर पर लाने** हेतु लक्षित प्रयासों के कारण संभव हो पाया है।
  - **उद्योग और निर्यात-अनुकूल नीतियों** को लगातार अपनाया गया है और इन्हें व्यापक हितधारकों के परामर्श से तैयार किया गया है।

- **सार्वजनिक–निजी भागीदारी:** कंपनियों और सरकार के बीच मजबूत भागीदारी को बढ़ावा दिया जाना अत्यंत आवश्यक है। उदाहरण के लिए– एक भारतीय तकनीकी कंपनी वर्तमान में आपूर्ति श्रृंखला के लचीलेपन को बनाए रखने के लिए एक **'अर्ली वार्निंग सॉल्यूशन'** प्रदान कर रही है। ऐसे मॉडल्स को सरकारी समर्थन देकर उन्हें सार्वजनिक–निजी भागीदारी (PPP) मॉडल में बदला जा सकता है।
- **लॉजिस्टिक्स और परिवहन को सुसंगत बनाना:** सुसंगत लॉजिस्टिक्स और परिवहन मानकों के कार्यान्वयन से बाधाओं को कम करने और वस्तुओं की आवाजाही को आसान बनाने में मदद मिल सकती है।
- **नीतिगत सुसंगतता सुनिश्चित करना:** यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि GVCs के एकीकरण के उद्देश्य से बनाई गई नीतियां उपभोक्ता संरक्षण, श्रमिकों के कल्याण, अच्छी नौकरियों के सृजन, प्रतिस्पर्धा, लैंगिक समानता और हरित बदलाव जैसी अन्य नीतिगत प्राथमिकताओं के अनुरूप हों।

## वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं की संधारणीयता

- GVCs के तहत किए जा रहे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण परिवहन और उत्पादन में **ऊर्जा की खपत तथा $CO_2$ उत्सर्जन के बढ़ने** से जलवायु परिवर्तन में भी वृद्धि हुई है (इन्फोग्राफिक देखें)।
- फिर भी, GVCs का **ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन और जलवायु परिवर्तन पर शमनकारी प्रभाव रहा है।**
  - यदि GVCs के तहत उत्पादन और वितरण में **घरेलू उत्पादन की तुलना में कम उत्सर्जन होता है** तो ऐसा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार $CO_2$ उत्सर्जन को कम कर सकता है।
  - GVCs में भागीदारी के माध्यम से प्रौद्योगिकी का प्रसार पर्यावरणीय रूप से संधारणीय नई प्रौद्योगिकी के प्रसार में योगदान देता है। इस प्रकार यह विकसित और विकासशील दोनों देशों में **कार्बन तटस्थता** की ओर बढ़ने में मदद कर सकता है।
  - GVCs में भागीदारी आपूर्तिकर्ता कंपनियों द्वारा **वैश्विक मानकों और पर्यावरण संबंधी प्रमाणन के अनुपालन** को सुनिश्चित कर सकती है। इससे इन कंपनियों के कार्बन फुटप्रिंट्स भी कम हो सकते हैं।

### GVC में कार्बन उत्सर्जन

- **परिवहन से उच्च GHG उत्सर्जन होता है। यह अनुमानित रूप से कुल वैश्विक उत्सर्जन में 3.5%** का योगदान करता है।
- **GVCs** से **ग्लोबल एनर्जी फुटप्रिंट** की वृद्धि में तेजी आती है, जिसमें **मजबूत बैकवर्ड लिंकेज के कारण ऊर्जा** के उपयोग में भी वृद्धि हो सकती है।
- **अंतर्राष्ट्रीय कार्बन लीकेज (अर्थात् ऐसे देशों में उत्पादन को स्थानांतरित करना, जहां जलवायु संबंधी नीतियां कम सख्त हों) से उत्सर्जन का बोझ स्थानांतरित होता है और इसके चलते जलवायु शमन लक्ष्यों के लिए खतरा उत्पन्न होता है।**
- **GVCs** के लागत–लाभ के परिणामस्वरूप इलेक्ट्रॉनिक्स, प्लास्टिक और खाद्य पदार्थ सहित कई उत्पादों में **अत्यधिक उत्पादन तथा अत्यधिक अपशिष्ट देखा गया है।**

# निष्कर्ष

महामारी के कारण विविधीकरण की आवश्यकता और रणनीतिक कारणों से आपूर्ति श्रृंखला की सुरक्षा सुनिश्चित करने जैसे कई कारकों के चलते वर्तमान में GVC परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। इसने नए देशों के लिए मौजूदा मूल्य श्रृंखलाओं में शामिल होने और बाजार में अपनी अधिक हिस्सेदारी हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण अवसर पैदा किए हैं। अतः जब तक भारत जैसी उभरती हुई अर्थव्यवस्था इससे संबंधित प्रमुख चुनौतियों का समाधान नहीं कर लेती है तब तक भारत GVCs में इस परिवर्तन के दौर से लाभ नहीं उठा पाएगा। इसलिए केवल आयातित सामग्रियों पर निर्भरता कम करने पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, भारत को अपनी क्षमता विकसित करने, नई क्षमता हासिल करने, मौजूदा व्यवस्था को अपग्रेड करने, कारोबार सुगमता में सुधार करने और GVCs एकीकरण को बढ़ाने के लिए MSMEs को भी शामिल करने पर ध्यान देना चाहिए। यदि इन सब को कुशलतापूर्वक अपनाया जाए, तो GVC भारत की आर्थिक संवृद्धि, रोजगार, उत्पादकता और आय को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है।

# टॉपिक: एक नज़र में

## वैश्विक मूल्य श्रृंखलाएं (GVCs): भारत के लिए संभावनाएं और चुनौतियां

वैश्विक मूल्य श्रृंखला (GVCs) वस्तुतः उपभोक्ताओं को बेचे जाने वाले उत्पाद या सेवा के उत्पादन में शामिल चरणों की एक श्रृंखला है। इसमें उत्पादन के प्रत्येक चरण में मूल्य वर्धन होता है और इस उत्पादन के कम-से-कम दो चरण अलग-अलग देशों में संपन्न होते हैं।

### GVCs में भागीदारी के प्रमुख लाभ

- **उत्पादकता में बढ़ोतरी:** मानक व्यापार की तुलना में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि लगभग दोगुनी होती है।
- **निर्धनता में कमी:** यह रोजगार के पर्याप्त अवसर और मजबूत उत्पादन प्रणाली में विस्तार के कारण होता है।
- **विशेषज्ञता के लिए अधिक गुंजाइश:** देश किसी विशेष चरण के लिए लक्षित उद्योग स्थापित कर सकते हैं।
- **ज्ञान साझाकरण में सुगमता:** यह औद्योगिक उन्नयन, उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार आदि के लिए लाभदायक है।
- **स्थानीय कंपनियों को मजबूती:** इकोनॉमी ऑफ़ स्केल को प्राप्त करने, जानकारी और प्रौद्योगिकी के साझाकरण से।

### अलग-अलग देशों द्वारा GVCs में भागीदारी के तरीके

- **बैकवर्ड लिंकेज:** जब कोई देश घरेलू उत्पादन के लिए किसी अन्य देश से इनपुट का उपयोग करता है।
- **फॉरवर्ड लिंकेज:** जब कोई देश, किसी दूसरे देश में उत्पादन के लिए इनपुट की आपूर्ति करता है।

### GVCs भागीदारी के प्रमुख निर्धारक

- **गैर-नीतिगत कारक:** सहायक कारक, बाजार का आकार, औद्योगिक संरचना, अवस्थिति/ भौगोलिक विशेषता।
- **नीतिगत कारक:** व्यापार नीति, FDI के लिए खुलापन, संस्थागत गुणवत्ता आदि।

### GVCs में हाल के बदलाव के प्रतिमान

- वैश्विक मूल्य श्रृंखलाएं अधिक ज्ञान-केंद्रित होती जा रही हैं।
- मूल्य श्रृंखलाएं अधिक क्षेत्रीय और कम वैश्विक होती जा रही हैं।
- वस्तु-उत्पादन वाली मूल्य श्रृंखला की व्यापार-गहनता में गिरावट आई है।
- श्रम-लागत संबंधी मूल्य लाभ (Labour-cost Arbitrage) पर आधारित व्यापार में गिरावट आ रही है।
- GVCs में सेवाओं की भागदारी में वृद्धि हो रही है, लेकिन यह मूल्य के मामले में वस्तुओं के व्यापार से पीछे है।

### GVCs के साथ भारत की भागीदारी को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने वाली बाधाएं क्या हैं?

- **घरेलू उद्योग पर केंद्रित आर्थिक नीति:** आयात प्रतिस्थापन, लाइसेंस राज आदि।
- **लीड फर्म्स की कम संख्या:** कौशल की कमी, वित्त तक पहुंच की कमी, कस्टम प्रक्रियाएं आदि के कारण।
- **MSMEs से अपेक्षित लाभ न उठा पाना:** अपर्याप्त नवाचार, लीड फर्म्स के साथ अपर्याप्त लिंकेज आदि के कारण।
- **सीमित क्षेत्रीय एकीकरण:** सार्क निष्क्रिय स्थिति में है और भारत ने स्वयं को RCEP से अलग कर लिया है।
- **तकनीकी बदलाव:** भारत में कार्यबल की री-स्किलिंग और अप-स्किलिंग की गति अत्यंत धीमी है।
- **फर्मों/ कंपनियों द्वारा सामना की जाने वाली संरचनात्मक कमियां:** गुणवत्ता मानकों को पूरा करना, संस्थागत समर्थन की कमी आदि।

### GVCs में स्वयं को एकीकृत करने के लिए भारत द्वारा शुरू की गई प्रमुख पहलें

- **उत्पादन से संबंद्ध प्रोत्साहन (PLI):** भारत को ऑटोमोबाइल और ऑटो पार्ट्स आदि जैसे 14 प्रमुख क्षेत्रकों में विनिर्माण हब बनाना।
- **श्रम सुधार:** अलग-अलग कानूनों का चार संहिताओं, यथा- मजदूरी; व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य, कार्यदशा; औद्योगिक संबंध; और सामाजिक सुरक्षा में समेकित किया गया है।
- **अवसंरचना विकास:** भारतमाला, सागरमाला, राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन कार्यक्रम, पी.एम. गति शक्ति आदि।
- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI):** अर्थव्यवस्था के अधिकांश क्षेत्रों में, भारत द्वारा 100% तक विदेशी निवेश की अनुमति दी गई है।
- **विदेश व्यापार नीति (FTP) 2023:** इसका लक्ष्य री-इंजीनियरिंग और ऑटोमेशन है।

### भारत GVCs में अपने एकीकरण को निम्नलिखित के माध्यम से और बेहतर कर सकता है:

- **कौशल विकास:** इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर्स (अर्धचालकों) आदि जैसे उच्च तकनीक वाले क्षेत्रकों के लिए।
- **क्षेत्रक आधारित विविधीकरण:** रक्षा, एयरोस्पेस और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रक वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में भारत की भागीदारी को बढ़ा सकते हैं।
- **MSMEs को समर्थन:** विश्वसनीय ऋण, वित्त तक पहुंच सुनिश्चित करने और डिजिटलीकरण तथा औपचारीकरण को प्रोत्साहित करने और सुगम बनाने की आवश्यकता है।
- **अवसंरचना को अपग्रेड करना:** आई.सी.टी., ब्रॉडबैंड और 5G कनेक्टिविटी में वृद्धि करके, 'राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति' आदि का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जा सकता है।
- **अन्य:** कारोबारी माहौल में सुधार करना, GVCs के साथ लिंकेज संबंधी लचीलापन सुनिश्चित करना आदि।